डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

पाठ्य सामग्री,

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 02.09.2020

व्याख्यान संख्या-49 (कुल सं. 85)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

फिरि घरको नूतन पथिक चले चकित चित भागि।

फूल्यो देखि पलास बन, समुहें समुझि दवागि।।

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' से उद्धृत है। इसके रचयिता रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि बिहारी हैं, जिनकी रचना 'बिहारी सतसई' हिन्दी साहित्य में लोकप्रियता के क्षेत्र में रामचरितमानस के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक मानी जाती है।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

प्रस्तुत प्रसंग वसंत ऋतु के वर्णन का है। वसंत ऋतु में वन में पलाश फूलता है। खिले हुए पलाश का लाल रंग देखकर दूर से देखने वाले को ऐसा जान पड़ता है जैसे कि जंगल में आग लगी हुई है। ऐसे दृश्य का वर्णन कवि करते हैं और यह कहते हैं कि खिले हुए पलाश को देखकर आग का भ्रम होना केवल कवि-कल्पना नहीं है, बल्कि वास्तव में ऐसे पथिक, जिन्होंने पहले कभी फूला हुआ पलाश जंगलों में नहीं देखा हो, इस दृश्य को देखकर ऐसे भ्रम में पड़ जाते हैं कि आगे नहीं बढ़ते और लौटकर घर भागे जाते हैं।

कवि कहते हैं कि नये पथिक जो पहले-पहल ही वसंत ऋतु में यात्रा को निकले थे, आश्चर्यचकित हृदय वाला होकर वापस घर की ओर भाग चले। वन में पलाश को फूला हुआ देखकर उन्होंने समझा कि सामने ही दावाग्नि अर्थात् जंगल में आग लगी हुई है।

यह ध्यातव्य है कि खिले हुए पलाश की उपमा कविगण जंगल में लगी हुई आग से देते हैं। प्रस्तुत दोहे में कवि का यह कहना है कि ऐसी उपमा केवल कवि-कल्पना हो ऐसी बात नहीं है, बल्कि कोई अनुभवहीन व्यक्ति अर्थात् जिसने पहले नहीं देखा हो, ऐसा कोई व्यक्ति यदि पहले-पहल पलाश के अनेक वृक्षों को यदि फूला हुआ देखे तो उसे सचमुच यह जान पड़ता है कि वन में आग

लग गयी है। इसलिए स्वयं कवि के अनुसार कवि की यह कल्पना यथार्थ को प्रतीकित करने वाली ही है।

प्रस्तुत दोहे में 'नूतन पथिक' कहने से कवि का तात्पर्य है कि ऐसा पथिक जिसने पहले कभी लंबी यात्रा करके तत्संबंधी अनुभव प्राप्त नहीं किया हो। 'समुहें' का अर्थ सम्मुख अथवा सामने आयी हुई है। 'दवागि' दावाग्नि का बिगड़ा हुआ रूप है। 'दाव' का अर्थ होता है जंगल और अग्नि का अर्थ आग। इस प्रकार 'दावाग्नि' का अर्थ होता है जंगल में लगने वाली आग।

प्रस्तुत दोहे में भ्रांतिमान् अलंकार है। भ्रांतिमान् एक सादृश्यमूलक अलंकार है। अत्यधिक सादृश्य के कारण जब प्रस्तुत में अप्रस्तुत की निश्चयात्मक भ्रांति हो तो भ्रांतिमान् अलंकार होता है। भ्रांतिमान् का अर्थ भ्रमपूर्ण ज्ञान है। इसमें उपमान के सदृश उपमेय को देखकर उसमें उसकी निश्चयात्मक भ्रांति होती है। भ्रांतिमान् में भ्रम का कविकल्पनाप्रसूत या चमत्कारपूर्ण वर्णन होता है। उपर्युक्त दोहे में जंगल की आग में इसी प्रकार से आग का भ्रम होने के कारण भ्रांतिमान् अलंकार है।